पुनर्जागरण (1350 – 1550 ई)

Renaissance

⇒ यूरोप के मध्य काल के अन्त के आस-पास ऐसी परिस्थितियाँ पैदा हुई जिससे मनुष्यों को चेतनायुक्त बनाया। यही चेतना 'पुनर्जागरण' कहलाया।

⇒ पुनर्जागरण कोई राजनीतिक अथवा धार्मिक आन्दोलन नहीं था। बल्कि पुनर्जागरण 14वीं – 16वीं शताब्दियों के बीच में पश्चिमी यूरोपीय विचार, साहित्य और कला की लौकिक प्रवृत्तियों का तीव्रीकरण था।

Note :- स्विस इतिहासकार जैकब बुर्कहार्ट की कृति 'सिविलाइजेशन ऑफ द रिनेसां इन इटली' प्रकाशन 1860 में स्पष्ट लिखा कि पुनर्जागरण एक लम्बी नैतिक एवं बौद्धिक जड़ता के बाद अस्तित्व में आया था।

आगे लिखता है कि मानव चेतना के क्षेत्र में एक बड़ा क्रांतिकारी कदम था और इसमें इटली की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण थी।

रोचक तथ्य : रोमन साम्राज्य के पतन होते ही यूरोप के मध्यकाल के अन्त तक बहुत से तत्व नगण्य अवस्था में पहुँच चुकी थी वह फिर से पुनर्जागरण काल में महत्वपूर्ण हो गया जैसे— लौकिक जगत के प्रति आस्था, मानवतावाद का विकास, रूढ़िवादिता के स्थान पर तर्कवाद की महत्व प्राकृतिक सौंदर्य की अनुभूति इत्यादि।

ध्यान रखें :- आधुनिक इतिहासकारों का मानना है कि पुनर्जागरण की घटना कोई आकस्मिक नहीं है बल्कि इसका आभास तो हमें पहले से होता है। ~~जैसे~~ 14वीं शताब्दी से पहले भी समय

समय - समय पर सामूहिक मानसिक उद्वेग, चिंतन और मनन के उदाहरण मिलते है।
इससे पहले भी कम-से कम दो आन्दोलन दिखाई पड़ता है।-

⇒ (i) कैरोलिंगियन पुनर्जागरण जो 9वीं शताब्दी में हुआ।

(ii) दूसरा बारहवीं शताब्दी का आन्दोलन जिसमे मानवतावदी विचारों का विकास हुआ।

इस दौरान → पेरिस, ऑक्सफोर्ड, आदि विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई।
और यूनान के धर्मशास्त्री तथा नैतिक ग्रंथों की खोज पुनः शुरु हुई।

⇒ सम्राट फ्रेड्रिक द्वितीय (1212-50 ई) मानसिक स्वतंत्रता और आत्म निर्भरता जो पुनर्जागरण के लक्षण थे का समर्थक था।

⇒ इसी के नेतृत्व में इटली (सिसली) में बौद्धिक एवं साहित्यिक वातावरण का सृजन शुरु हुआ।

⇒ पुनर्जागरण के क्षेत्र में जुडे लोग :-

* फ्रांस के पीटर आबेलार (1079-1142 ई०)
* इंग्लैण्ड के रोजर बेकन (1214-1294 ई०)
* इटली के दांते (1265-1321 ई०)

⇒ इनलोगों ने सर्वप्रथम अंधविश्वास के स्थान पर वैज्ञानिक दृष्टि प्रदान करके मानव की दुर्बलताओं को पहचानने की प्रेरणा दी।

अर्थ पुनर्जागरण का अर्थ

पुनर्जागरण शब्दावली से उन सभी बौद्धिक परिवर्तनों का बोध होता है जो मध्ययुग के अन्त में दृष्टिगोचर हो रहे थे। परिवर्तन से तात्पर्य :- सामन्तवाद की अवनति प्राचीन ~~साहि~~ साहित्य का अध्ययन, राष्ट्रीय राज्यों का उत्थान, आधुनिक विज्ञान का प्रारम्भ बारूद एवं कुतुबनुमा का अविष्कार, नए व्यापारिक मार्गों की खोज etc

"मानव के स्वातन्त्र्य प्रिय साहसी विचारों को, जो मध्ययुग में धर्माधिकारियों द्वारा जकड़े व बंदी बना दिए गए थे, व्यक्त करता है।"

_____ डेविस

⇒ फ्रांस के प्रसिद्ध इतिहासकार जुल्स मिशेलेट ने पुनर्जागर के दो आयाम बताएं:
- दुनिया की खोज
- मनुष्य की खोज

→ दुनिया की खोज का मतलब → 15वीं – 16वीं शताब्दी की भौगोलिक उपलब्धियों से

→ मनुष्य की खोज का मतलब → मध्यकालीन पोपशाही को अस्वीकार किया तथा विकसीत एंव स्वतंत्र दृष्टि का अवलम्बन किया।

सीमोण्ड ने पुनर्जागरण की व्याख्या करते हुए लिखा की,
"यह एक आन्दोलन था, जिसके द्वारा पश्चिम के राष्ट्र मध्ययुग से निकलकर आधुनिक विचार तथा जीवन की पद्धतियों को ग्रहण करने लगें।"

पुनर्जागरण के कारण
Causes of Renaissance

पुनर्जागरण के कारण
- धर्मयुद्ध
- व्यापारिक समृद्धि
- कागज और मुद्रण यंत्र
- कुस्तुनुनिया पर तुर्कों का अधिकार
- मंगलो साम्राज्य का उदय :-

धर्मयुद्ध :-

⇒ 11वीं सदी के अंतिम दशक से 13वी शताब्दी के अंत तक युरोप में धर्म सुधार आन्दोलन हुआ।

⇒ यह आन्दोलन ईसाइ धर्म के पवित्र स्थल जेरुसलम को लेकर लड़ा गया था।

⇒ ये आन्दोलन दो धर्मो के बीच हुआ → मुस्लमानों (सेल्जुक तुर्क) → ईसाइयो के

⇒ इस धर्मयुद्ध के कारण यूरोपवासियों का सम्पर्क पूर्व के लोगों के साथ हुआ जिससे नए-नए लोगों से मिले और विचारों का अदान-प्रदान किए।

⇒ जो लोग धर्म युद्ध से लौटे उनका बौद्धिक क्षितिज अधिक विशद हो गया।

Note :- मध्य युग में लोगों में ये धारणाएँ बन चुका था कि मानव को इलोक और परलोक में जितना जरुरी है सब चर्च के द्वारा ही पूर्ण हो सकता है।

परन्तु धर्मयुद्ध के बाद इस विचार को खण्डन किया जाने लगा।

ध्यान दें :- अरस्तु का वैज्ञानिक ग्रंथ, अरबी अंक, बीजगणित दिग्दर्शक यंत्र और कागज का ज्ञान युरोप में धर्म युद्ध के माध्यम से ही पहुँचा।

व्यापारिक समृद्धि :-

⇒ पुनर्जागरण का सबसे बड़ा कारण व्यापार का उदय माना जाता है इसके कारण शहरों का विकास हुआ। शहर का वातावरण स्वतंत्र होता चला गया।

⇒ अब व्यापारियों का उद्देश्य हो गया सामन्तप्रथा और चर्च से लड़ना।

⇒ लोग अब प्रत्येक चीज पर वाद-विवाद करने लगे जिससे स्वतंत्र विचार बढ़ा और ज्ञान की प्रगति हुई।

धर्म युद्ध के चलते यूरोप के पूर्वी देशों के साथ व्यापारिक संपर्क बढा। व्यापार में वृद्धि होने से पुनर्जागरण में चार प्रकार के सहयोग देखा जा सकता है:-

(I) युरोपीय व्यापारी व्यापार के सिलसिले में विभिन्न देशों में पहुँचे जहाँ से वे नए विचार एवं प्रगतिशील तत्वों से परिचित हुए।

(II) व्यापार के विकास ने नए नगरों जैसे → वेनिस, मिलान फ्लोरेंस, आंग्सबर्ग न्यूरेमबर्ग आदि का जन्म हुआ। ये नगर अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का केन्द्र बनने लगा। जिससे व्यापारियों एवं यात्रियों का आना जाना लगा रहा। लोग अब चर्च के प्रति शंका व्यक्त करने लगे।

(III) व्यापार से अत्यधिक धन संग्रहित हुआ। अब उन्हे विद्यार्जन का अवसर मिला।

⇒ यह अवसर मध्ययुग में केवल पादरियों को ही था। लेकिन अब जनसाधारण को भी सुलभ होने लगा।

⇒ व्यापारी लोग कला का पोषक बन गया। विद्वानों को अपने यहाँ आश्रय देने लगे।

Note:- फ्लोरेंस जो इटली में पुनर्जागरण का सबसे बड़ा केन्द्र था वो बड़े-बड़े महाजनों एवं मालदारों का अड्डा।

(IV) व्यापार में सूद अतिआवश्यक था लेकिन चर्च इसको मान्यता नहीं देता था अतः व्यापारियों ने इसका विरोध किया।

कागज और मुद्रण यंत्र

⇒ यूरोप में कागज और मुद्रण यंत्र के बिना पुनर्जागरण संभव नहीं था।

⇒ ~~मध्य~~ कागज का अविष्कार चीन में हुआ। वहाँ से कागज बनाने का तरिका अरबों ने सीखा और फिर उसे स्पेन के रास्ते यूरोप में फैलाया।

⇒ इटली, आरम्भ में सबसे अच्छे quality का कागज बनाता था।
⇒ 14वीं शताब्दी तक जर्मनी ने भी कागज बनाना सीख लिया।
⇒ 15वीं सदी के मध्य में जर्मनी के गुटेनबर्ग ने एक टाइप मशीन का अविष्कार कर दिया (1439 ई०) जिससे कागज का महत्व बढ़ गया।
⇒ 1477 में कैक्सटन ने ब्रिटेन में छापाखाना स्थापित किया अब यह यंत्र धीरे-धीरे युरोप के लगभग शहर में स्थापित किया जाने लगा।
⇒ बड़ी तेजी से पुस्तकों की छपाई शुरू हुई जब पहली बार इरैस्मस की पुस्तक (प्रेज ऑफ फॉली) छपी तो वह खूब बिकी।
⇒ अब ज्ञान पर विशिष्ट लोगों का एकाधिकार समाप्त होने लगा।
⇒ बौद्धिक साहित्य सस्ते दामों पर उपलब्ध कराया जाने लगा।
⇒ लोगों में साक्षरता की इच्छा के साथ-साथ सांस्कृतिक जागरण की भावना को बल मिला।

Note:- बेकन ने कहा "सत्य सत्ता की नहीं वरन् समय की पुत्री है की शिक्षा दी।"

⇒ इस प्रकार हम देखते है कि लोग अब तर्क वितर्क करने लगे।

कुस्तुन्तुनिया पर तुर्कों का अधिकार :

⇒ 1453 ई० तुर्कों ने पूर्वी रोमन (बाइजेन्टाइन) साम्राज्य की राजधानी कुस्तुन्तुनिया पर अधिकार कर लिया
⇒ इससे पूर्वी रोमन साम्राज्य का सदैव के लिए पतन हो गया
⇒ कुस्तुन्तुनिया पर तुर्कों के अधिकार से दो परिणाम सामने आए :-

(i) जब कुस्तुन्तुनिया पर उस्मानी तुर्कों का अधिकार हुआ तो ~~पश्चिम से पूर्व की ओर~~ पूर्व से पश्चिम की ओर होने वाले व्यापार मार्ग अवरुद्ध हो गया क्योंकि ये तुर्क व्यापारियों को खुब परेशान करते थे।-

परिणामत: नए सामुद्री मार्गों का खोज हुई। परिणाम० नए-नए दुनिया से लोग जुड़े।

(ii) कुस्तुन्तुनिया लगभग 200 वर्षों से कला एवं विद्या का केन्द्र रहा था यहाँ पर एक से बढ़कर एक दार्शनिक, शिल्पकार चिकित्सक रहते थे अत: जब तुर्कों अधिकार हुआ तो उन लोगों को परेशान किया जाने लगा अत: भागकर यूरोप के विभिन्न शहरों में बसे जाते समय यूनान के प्राचीन ज्ञान-विज्ञान साथ लेकर चले गए।

Note :- अकेला कार्डिनल बेसारिओन 800 पाण्डुलिपियों के साथ इटली पहुँचा।

मंगोल साम्राज्य का उदय :-

⇒ विशाल मंगोल साम्राज्य के आँगन में एशिया और यूरोप के बीच सम्पर्क स्थापित होने से पुनर्जागरण को बड़ी प्रेरणा मिली।

⇒ 13वीं सदी के प्रसिद्ध मंगोल नेता चंगेज खाँ की मृत्यु के बाद उसके साम्राज्य का उत्तराधिकारी कुबलाई खाँ बना और एक विशाल साम्राज्य पर शासन किया। जिसमें रूस, पोलैंड, हंगरी आदि प्रदेश शामिल थे।

⇒ कुबलाई खाँ का दरबार विद्वानों, धर्मगुरुओं, व्यापारियों यात्रियों का केन्द्र था

⇒ मंगोल राजसभा में पोप के दूतों, भारत के बौद्ध भिक्षुओं पेरिस इटली तथा चीन के दस्तकारों कुस्तुन्तुनिया और

~~आसके~~ अर्मीनिया के व्यापारियों का सम्पर्क फारस तथा भारत के गणितज्ञों एवं ज्योतिषाचार्यों के साथ होता था।

⇒ परस्पर विचार-विनियम होने से विद्वानों को बड़ा लाभ हुआ

⇒ वेनिस निवासी मार्कोपोलो 1272 ई० में कुबलाई खाँ के दरबार में गया।

⇒ वह दरबार से लौटकर अपना यात्रावृतांत लिखा। उसके यात्रावृतांत के प्रकाशन से युरोपियों के मस्तिष्क पर गहरा छाप छोड़ा

⇒ मंगोलो के सम्पर्क से कागज एवं मुद्रण कुतुबनुमा तथा बारुद की सर्वप्रथम जानकारी मिला।

⇒ मार्कोपोलों के विवरण से प्रभावित होकर कोलम्बस समुद्रीयात्रा द्वारा चीन पहुँचा।